Goverment Degree College, Madhuban,
Pakridayal, East-Champaran
(B.R.A.B.U. Muzaffarpur)

B.A., Part-I, Hon./Sub.
Subject : Geography
Topic : वायु-राशि का वर्गीकरण
(Classification of the Air mass)

By,
Dr. Md. Jamshed Alam
Assistant Professor

Email ID : Jamshedmit@gmail.com
Whatsapp No. : 9097179092

वायु राशि का वर्गीकरण
(Classification of the Air mass)

वायु-राशि का वर्गीकरण निम्न-लिखित प्रमुख आधारों पर किया जाता है :—

1. स्रोत क्षेत्र के आधार पर — यह वर्गीकरण तापमान तथा आर्द्रता को आधार मानकर किया

गया है।

(i) तापमान के आधार पर :—
(a) ध्रुवीय वायु राशि
(b) उष्णकटिबंधीय वायु राशि

(ii) आर्द्रता के आधार पर :—
(a) सामुद्रिक वायु राशि
(b) महाद्वीपीय वायु राशि

2. उत्पत्ति-क्षेत्र के आधार पर :— पीटरसन ने उत्पत्ति क्षेत्रों की स्थिति के आधार पर वायु-राशि को 5 स्थूल वर्गों में विभाजित किया :—
(i) उष्ण कटिबंधीय वायु-राशि
(ii) आर्कटिक वायु-राशि
(iii) ध्रुवीय वायु-राशि
(iv) मध्य अक्षांशीय वायु-राशि
(v) अन्टार्कटिका वायु-राशि

ट्रिवर्था ने भी उत्पत्ति क्षेत्र के आधार पर मुख्यतः वायु-राशि को दो वर्गों में विभाजित किया :—
(i) ध्रुवीय वायु-राशि
(ii) उष्ण कटिबंधीय वायु-राशि

3.

3. बर्गरान ने दो तरह के वर्गीकरण प्रस्तुत किये :—
(i) भौगोलिक वर्गीकरण
(ii) उष्मागतिक वर्गीकरण

(i) भौगोलिक वर्गीकरण :— इसके अन्तर्गत वायु-राशियों को उनके उदगम - क्षेत्र के आधार पर नामांकित किया जाता है।

(ii) उष्मागतिक वर्गीकरण :— उष्मा-गतिक वर्गीकरण वायु-राशि के उष्मा व आर्द्रता में परिवर्तन की विशेषताओं पर आधारित है, यह वर्गीकरण ही अधिक व्यवहारिक है। इसे एक उदाहरण के साथ समझा जा सकता है — यदि सहारा मरुस्थल में कोई वायु-राशि उत्पन्न होगी तो भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर उसे उष्ण कटिबंधीय महाद्वीपीय वायु-राशि कहा जायेगा, जबकि यही वायु-राशि यदि भूमध्यसागर को पार करेगी, तो उसमें आर्द्रता अवश्य ही आ जाएगी। अतः उष्मागतिक वर्गीकरण करने पर ही उपरोक्त समस्या का समाधान हो सकता है

चिह्न	नाम	जाड़े का स्रोत	ग्रीष्म का स्रोत	विशेष
A	ध्रुव वृतीय	1	1	ग्रीष्म में महत्वहीन
CP	ध्रुवीय महाद्वीपीय	2	2	जाड़े में तीव्र
MP	ध्रुवीय समुद्री	3	3	
CT	उष्ण महाद्वीपीय	6	4	ग्रीष्म में मुख्य
MT	उष्ण समुद्री	7	5	
E	विषुवत रेखीय	8	6	
m	मानसून	9	7	
S	सुपीरियर	—	—	

जब किसी क्षेत्र में वायु-राशि का आविर्भाव हो जाता है तो वह उस क्षेत्र की वायुदशाओं को आत्मसात कर आगे बढ़ जाती है। आगे चलते समय वे अपने मार्ग में पड़नेवाले क्षेत्र के न केवल मौसम को ही प्रभावित करती है, अपितु उसकी आर्द्रता में भी परिवर्तन उपस्थित कर देती है।

Next Class

(a) उष्ण वायु-राशियाँ
(b) शीतल वायु-राशियाँ

Md. Jamshed Alam